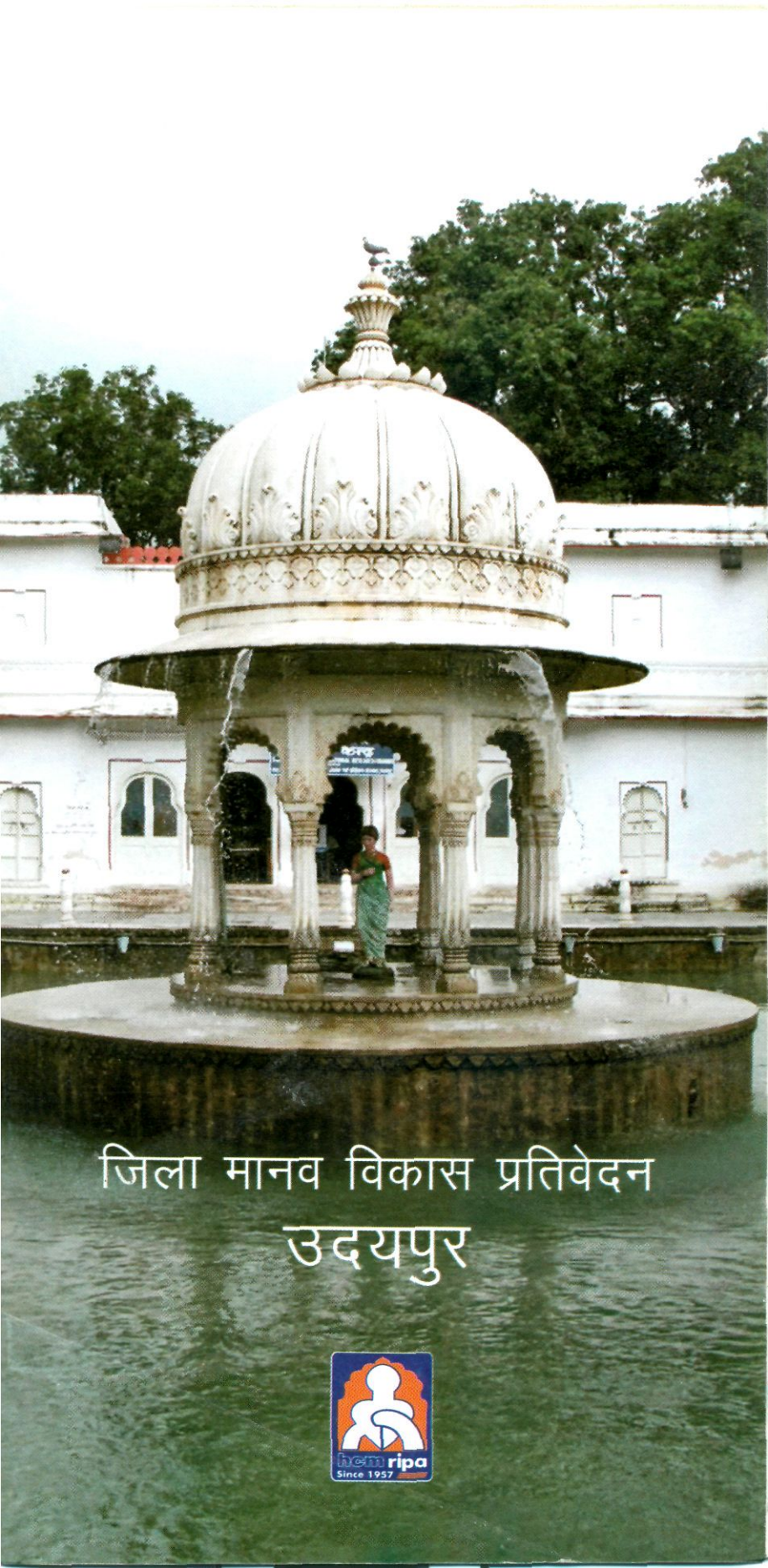

# जिला मानव विकास प्रतिवेदन
# उदयपुर

# जिला मानव विकास प्रतिवेदन उदयपुर

## पृष्ठभूमि

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 243 ZD के अनुसार जिला योजना समितियों का गठन कर उनके माध्यम से जिलों में पंचायतों और नगर पालिकाओं द्वारा तैयार की गई सहभागिता योजनाओं के समेकन के कार्य को किया गया है। क्षेत्रीय असंतुलन को दूर कर एवं उसका विश्लेषण करने के उद्देश्य से जिला मानव विकास रिपोर्ट का निर्माण किया गया है।

इस प्रतिवेदन का उद्देश्य जिले के पिछड़े क्षेत्रों की पहचान में सहायक होना, राज्य के भौतिक और वित्तीय संसाधनों का उचित आंकलन करना तथा राज्य योजना और जिला योजनाओं हेतु प्रगतिशील दृष्टिकोण को प्रेरित करना है।

## उदयपुर : भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

उदयपुर का क्षेत्र अर्वाचीन मानव संस्कृति के विकास की स्थली है। जिला उत्तरी अक्षांश 23°46'15" एवं 25°05'10" डिग्री तथा 73°10'20" एवं 74°40'15" डिग्री देशांतर के मध्य अरावली पर्वत की पहाड़ियों से घिरा जनजाति क्षेत्र है। यहां की भूमि पथरीली चट्टानी तथा रेतयुक्त चूना मिश्रित है। जिले का क्षेत्रफल 13,419 वर्ग कि.मी. (जनगणना 2001) व आबादी 30.68 लाख (2011) है। यहां की जलवायु सम शीतोष्ण और औसत वर्षा 645 मि.मी. तथा तापमान 3 से 48 डिग्री तक रहता है। इस शहर का नाम राणा उदयसिंह के नाम पर रखा गया था।

उदयपुर, बांगड़, गुजरात और राजपूती संस्कृति का एक बेजोड़ सम्मिश्रण है। यहॉ की ग्रामीण संस्कृति के उन्नायक यहॉ के भील, गरासिया राजपूत, भाट, चारण आदि आदिवासी जातियां है।

यहाँ स्थापत्य के उत्कृष्ट नमूने यथा आहड़, एकलिंगजी, ऋषभदेव, सारणेश्वर, जगदीश मन्दिर है तथा मनोहारी पिछोला, फतेह सागर, जयसमन्द, राजसमन्द है। झीलें प्राकृतिक सौंदर्य की अनुपम धरोहर हैं।

# जिले की प्रशासनिक व्यवस्था

भूतपूर्व रियासतों के राजस्थान में विलीनीकरण के पश्चात् गिर्वा, खमनोर, राजनगर, भीम, रेल मगरा, खेरवाड़ा एवं कुम्भलगढ़, नाथद्वारा, कांकरोली, सलूम्बर, देवगढ़, गोगुन्दा के ठिकानों को मिलाकर, उदयपुर जिले का गठन हुआ। कालांतर में इसमें से कुछ हिस्से काटकर राजसमन्द जिला बनाया गया था।

जिले में 7 उपखण्ड, 11 तहसीलें, 14 उप तहसीलें, 11 विकास खंड, 467 ग्राम पंचायतें, 400 पटवार मंडल, 53 भू.अ. निरीक्षक एवम् 5 नगर पालिका तथा 2,203 ग्राम है जिनमें 4 ग्रामदानी गांव हैं।

# जनसंख्या एवं लिंगानुपात

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार जिले की कुल जनसंख्या 30.68 लाख है जिसमें से 80.15 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्रों में और 19.85 प्रतिशत लोग शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं। जिले में जनसंख्या का घनत्व 242 व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर है। जिले में कुल परिवार 5,10,608 (2001) हैं। जिले का लिंगानुपात 958 है। जिले में 28.34 प्रतिशत बी.पी.एल. परिवार हैं।

## वन एवं खनिज सम्पदा

कुल 4587.42 वर्ग कि.मी. वन क्षेत्र है जिसमें जलाऊ लकड़ी, कोयला, बांस, महुआ, डोलमा, ऑवला, तेन्दू, खिरनी, शहद आदि उत्पन्न होते हैं।

इस जिले में सीसा, जस्ता, अभ्रक, ताम्र, रॉक फास्फेट, चायना क्ले, लौह, मार्बल इत्यादि खनिज उत्पन्न होते हैं।

## उद्योग

35 वृहद उद्योग जिनमें लगभग 40,763 स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त होता है। 12,970 लघु उद्योग इकाइयां हैं जिनमें 46,763 लोग रोजगार पाते हैं। यहाँ पर्यटन उद्योग भी विकसित है। (आंकडे 2006 के)

## शिक्षा

वर्ष 2011 में जिले में पुरुषों का साक्षरता प्रतिशत 75.91 एवं महिलाओं का 49.10 है। जिले में मोहन लाल सुखाडिया विश्वविद्यालय सहित 3 विश्व विद्यालय तथा 4 राजकीय महाविद्यालय, 21 निजी महाविद्यालय, 1 डीम्ड विश्वविद्यालय, एवम् 3 संबद्ध कॉलेजों सहित जिलें में महाविद्यालयों की संख्या 38 है। शिक्षक प्रशिक्षण, सर्व शिक्षा अभियान एवं समावेशित शिक्षा कार्यक्रमों के अन्तर्गत सबको शिक्षा उपलब्ध करवाने का कार्य हो रहा है।

## स्वास्थ्य

जिले में प्रमुख स्वास्थ्य सेवा संस्थाओं के अन्तर्गत 30 बैड वाले अस्पताल 6, 100 बैड वाले अस्पताल 1, 200 बैड वाले अस्पताल 1, 70 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र, 21 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, 557 स्वास्थ्य उप केन्द्र, 5 शहरी मातृ शिशु स्वास्थ्य केन्द्र, 2 सेटेलाइट अस्पताल, 2 मेडीकल कालेज निजी एवं सरकारी हैं। इसके अतिरिक्त 1 आयुर्वेदिक सरकारी कालेज, 1 होम्योपैथिक सरकारी कालेज, 4 ई.एस.आई. डिस्पेन्सरी, 1,652 आंगनवाड़ी केन्द्र (वर्ष 2005–06), 2666 अ.प्र.शि. बर्थ अटेन्डेन्ट तथा 10 ग्रामीण वेलफेयर केन्द्र है। एड्स उपचार हेतु 25 एकीकृत परामर्श एवं जॉच केन्द्र कार्यरत है । जिले में क्षय नियंत्रण कार्यक्रम राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप चल रहा है। केस डिटेक्शन 70 प्र.श. से 117.5 प्र.श. तथा क्योर रेट 85 प्र.श. से 89 प्र.श. हो गई है। सरकारी एवं गैर सरकारी सहयोग से वृहत स्तर पर निःशुल्क मोतियाबिन्द आपरेशन किये जाते हैं। गर्भवती महिलाओं की जॉच, टीकाकरण व प्रसव पूर्व व बाद की जॉच की जाती है। अस्पताल में प्रसव पर मानदेय दिया जा रहा है।

# आजीविका

जनसंख्या का बड़ा भाग कृषि या दैनिक मजदूरी पर निर्भर है। 8 प्रतिशत परिवार वेतनभोगी हैं। कृषि पर 58 प्रतिशत, हस्तकला कारीगिरी पर 4 प्रतिशत, मजदूरी में 21 प्रतिशत व अन्य कार्यों में 9 प्रतिशत लोग हैं।

पर्यटन एवं हस्तशिल्प का क्षेत्र आजीविका का एक प्रमुख साधन है। जिले में कई ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल तथा झीलें स्थित हैं जो लाखों देशी, विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करती हैं जिसके परिणाम स्वरूप रोजगार उत्पन्न होता है। पर्यटन उद्योग में रोजगारान्तर्गत, पर्यटक प्रशिक्षण कार्यक्रम, यात्रियों की आवासीय सुविधाओं हेतु होटलों व पेईंग गेस्टहाउस की सुविधाऐं विकसित की गई हैं।

# महिला सशक्तिकरण

जिले में महिला उत्थान हेतु चलाये जा रहे कार्यक्रमों में पाँच सूत्रीय महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम, महिला स्वयं सहायता कार्यक्रम, महिला स्वयं सहायता समूह कार्यक्रम, स्वावलम्बन योजना, सामूहिक विवाहों हेतु अनुदान योजना, किशोरी बालिका मंड़ल परियोजना प्रमुख हैं।

# जिले की समस्यायें

- **साक्षरता दर में कमी**
- पहाड़ी जन जातीय क्षेत्र, जनजातीय परिवारों के सभी सदस्यों का रोजगार तलाश करने हेतु गुजरात पलायन करना, कृषि जोत सीमित, सिंचाई का अभाव तथा यातायात साधनों की कमी।
- **चिकित्सा एवं महिला, बाल विकास क्षेत्र** में स्वास्थ्य सेवाओं पर जनसंख्या का भार अधिक है। शिशु मृत्यु दर अधिक एवं स्वास्थ्य सेवाओं में कुशलता की कमी है। आंगनवाड़ी केन्द्र उपेक्षित स्थानों पर हैं। स्वच्छ पेयजल का अभाव है।
- **रोजगार** के पर्याप्त साधनों का अभाव होने के कारण पलायन एक समस्या है। कृषि जोत छोटी तथा बंजड/पहाडियां है।
- **पशुपालन** क्षेत्र में चारागाह का अभाव। दुग्ध उत्पादन कम, दुग्ध संकलन में भुगतान विलम्ब से होने के कारण कमी आई।
- **जनसंख्या** मे वृद्विदर तीव्र है। 2001 से 2011 के बीच 23.63 प्रतिशत जनसंख्या बढ़ी।
- **परिवहन** सुविधाओं का अभाव है। अधिकतर क्षेत्र पहाड़ी है।
- लोगों में **जागरुकता का अभाव**। इसके कारण योजनाओं का उचित लाभ लोगों तक पूर्ण रुपेण नहीं पंहुच पाता है।

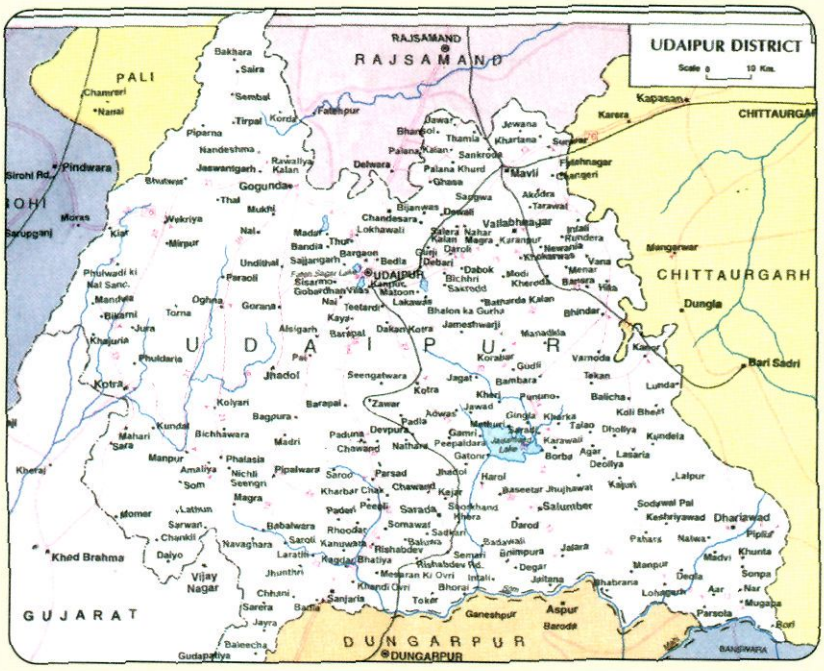


यू. एन. डी. पी.,
भारत सरकार
एवं
आयोजना विभाग
राजस्थान सरकार
जयपुर

---

सेन्टर फॉर गुड गवर्नेन्स
ह.च.मा. राजस्थान राज्य लोक प्रशासन संस्थान
जयपुर 302017

design by MERCURY